1965G An ancient travelogue

Tirth Yatra (*in Sanmati Sandesh*)

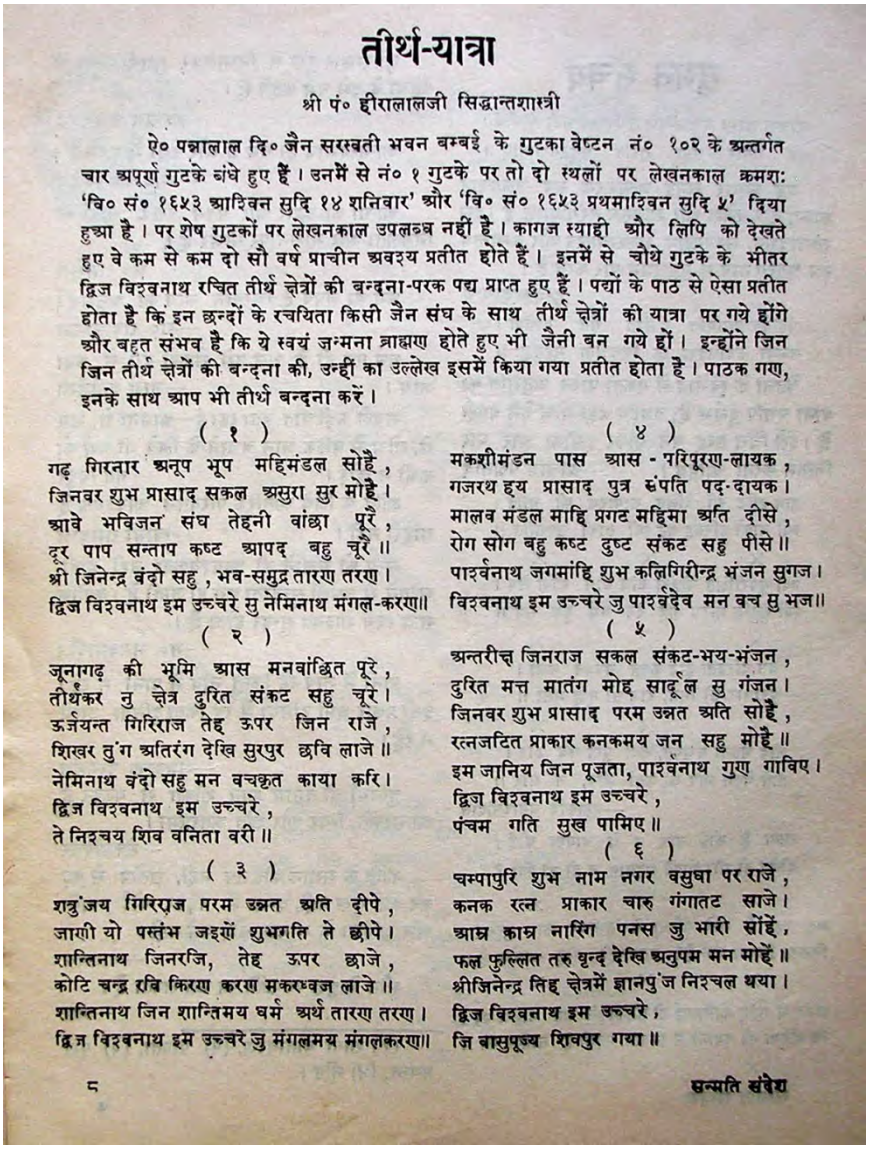

तीर्थ-यात्रा

श्री पं० हीरालालजी सिद्धान्तशास्त्री

ऐ० पन्नालाल दि० जैन सरस्वती भवन बम्बई के गुटका वेष्टन नं० १०२ के अन्तर्गत चार अपूर्ण गुटके बंधे हुए हैं। उनमें से नं० १ गुटके पर तो दो स्थलों पर लेखनकाल क्रमशः 'वि० सं० १६५३ आश्विन सुदि १४ शनिवार' और 'वि० सं० १६५३ प्रथमाश्विन सुदि ५' दिया हुआ है। पर शेष गुटकों पर लेखनकाल उपलब्ध नहीं है। कागज स्याही और लिपि को देखते हुए वे कम से कम दो सौ वर्ष प्राचीन अवश्य प्रतीत होते हैं। इनमें से चौथे गुटके के भीतर द्विज विश्वनाथ रचित तीर्थ क्षेत्रों की वन्दना-परक पद्य प्राप्त हुए हैं। पद्यों के पाठ से ऐसा प्रतीत होता है कि इन छन्दों के रचयिता किसी जैन संघ के साथ तीर्थ क्षेत्रों की यात्रा पर गये होंगे और बहुत संभव है कि ये स्वयं जन्मना ब्राह्मण होते हुए भी जैनी बन गये हों। इन्होंने जिन जिन तीर्थ क्षेत्रों की वन्दना की, उन्हीं का उल्लेख इसमें किया गया प्रतीत होता है। पाठक गण, इनके साथ आप भी तीर्थ वन्दना करें।

(१)

गढ़ गिरनार अनूप भूप महिमंडल सोहै,
जिनवर शुभ प्रासाद सकल असुरा सुर मोहै।
आवे भविजन संघ तेहनी वांछा पूरै,
दूर पाप सन्ताप कष्ट आपद बहु चूरै॥
श्री जिनेन्द्र वंदो सहु, भव-समुद्र तारण तरण।
द्विज विश्वनाथ इम उच्चरे सु नेमिनाथ मंगल-करण॥

(२)

जूनागढ़ की भूमि आस मनवांछित पूरे,
तीर्थंकर नु क्षेत्र दुरित संकट सहु चूरे।
ऊर्जयन्त गिरिराज तेह ऊपर जिन राजे,
शिखर तुंग अतिरंग देखि सुरपुर छवि लाजे॥
नेमिनाथ वंदो सहु मन वचकृत काया करि।
द्विज विश्वनाथ इम उच्चरे,
ते निश्चय शिव वनिता वरी॥

(३)

शत्रुंजय गिरिराज परम उन्नत अति दीपे,
जाणी यो पर्स्तंभ जइयें शुभगति ते छीपे।
शान्तिनाथ जिनरजि, तेह ऊपर छाजे,
कोटि चन्द्र रवि किरण करण मकरध्वज लाजे॥
शान्तिनाथ जिन शान्तिमय धर्म अर्थ तारण तरण।
द्विज विश्वनाथ इम उच्चरे जु मंगलमय मंगलकरण॥

(४)

मक्शीमंडन पास आस - परिपूरण-लायक,
गजरथ हय प्रासाद पुत्र संपति पद-दायक।
मालव मंडल माहि प्रगट महिमा अति दीसे,
रोग सोग बहु कष्ट दुष्ट संकट सहु पीसे॥
पार्श्वनाथ जगमांहि शुभ कलिगिरीन्द्र भंजन सुगज।
विश्वनाथ इम उच्चरे जु पार्श्वदेव मन वच सु भज॥

(५)

अन्तरीक्ष जिनराज सकल संकट-भय-भंजन,
दुरित मत्त मातंग मोह सार्दूल सु गंजन।
जिनवर शुभ प्रासाद परम उन्नत अति सोहै,
रत्नजटित प्राकार कनकमय जन सहु मोहै॥
इम जानिय जिन पूजता, पार्श्वनाथ गुण गाविए।
द्विज विश्वनाथ इम उच्चरे,
पंचम गति सुख पामिए॥

(६)

चम्पापुरि शुभ नाम नगर वसुधा पर राजे,
कनक रत्न प्राकार चारु गंगातट साजे।
आम्र काम्र नारिंग पनस जु भारी सोहें,
फल फुल्लित तरु वृन्द देखि अनुपम मन मोहें॥
श्रीजिनेन्द्र तिह क्षेत्रमें ज्ञानपुंज निश्चल थया।
द्विज विश्वनाथ इम उच्चरे,
जि बासुपूज्य शिवपुर गया॥

(७)

पावापुरि जिनराज सन्मति महावीर जु सोहै,
कनक कान्ति सम रूप देखि त्रिभुवन मन मोहै।
कर्म मत्त मातंग सुभग पंचानन गाजे,
कर्म जिव पनं (?) वृन्द नाम मात्रे सहु भाजे॥
अष्ट कर्म करि चूरि केवल ज्ञान उपाइयो,
द्विजविश्वनाथइमउच्चरे,जु शिववनिता जस गाइयो॥

(८)

हस्तिनाग जिन नगर तीन तीर्थंकर जानों;
शान्ति कु थू अरनाथ तेह नुं क्षेत्र बखानों।
उपनावली बहु सिद्धि दुःख-भंजन सुखकारी,
तजी राज धन ऋद्धि, मोह माया सहुहारी॥
संसार-सौख्य सहु परिहरिय अघ पर्वत भंजन थया।
द्विज विश्वनाथइम उच्चरे,जे निश्चय शिवपुरि गया॥

(९)

पैठन मध्य विशाल सुभग प्रासाद विराजे,
मुनि सुव्रत जिनराज नाम मात्रे दुख भाजे।
रोग शोक सन्ताप कष्ट आपद सहु जाये,
धनकन लच्छि अपार पुत्र नवनिधि गृहथाये।
पाप सन्ताप सहु चूरि करि सुख सम्पत बहुती करे,
द्विज विश्वनाथ इम उच्चरे, मुनिसुव्रत तारे तरे॥

(१०)

कुण्डलगिरि अति गहन परम उन्नत अति सोहै,
नन्दीश्वर जिनराज देखि सज्जन मन मोहै।
व्याघ्र सिंह सियाल तेहना वृन्द जु दीसै,
वैर-रहित गजराज, नहिं को पर नवि हीसै॥
कुण्डलगिरि वंदो सदा भव-वारिधि दृढ़ नौ तरण।
द्विज विश्वनाथ इम उच्चरे जु नंदीश्वर मंगल-करण॥

(११)

पाली शान्ति जिनेन्द्र, तेह वंदूं सुखकारी,
दुरित दोष सन्ताप मोह माया भव-हारी।
नामें नव निधि थाय परम मन-वांछित पूरे,
व्याघ्र सिंह सियाल विविध सकट सहु चूरे॥
पाली शान्ति पूजो सदा, मन वच कृत काया करि।
द्विज विश्वनाथ इम उच्चरे मुक्ति कामिनी तसवरि॥

(१२)

गोपाचल गढ़ तुंगनां जिनवर अति सोहे,
बावन गज भगवत देखि त्रिभुवन मन मोहे।
बसे धनिक नर विविध दान चारों नित दीये,
चार अर्थ नूं सौख्य तेह निश्चय पद लीये॥
बावन गज पूजौ बली स्मरण मात्र चिंतो मुदा।
द्विज विश्वनाथ इम उच्चरे भाव भक्ति वंदो सदा॥

(१३)

तुंगीगिरि मांही सकल असुरा सुर जानें,
शास्त्र सकल सिद्धान्त नाम बलभद्र बखानें।
सिद्धया बहु मुनिराज जाय शिववनिता पाम्या,
रोग शोक सन्ताप कष्ट आपद सहु वाम्या॥
बलभद्र देवनें पूजवा सकल संघ वंदो बली।
द्विज विश्वनाथ इम उच्चरे भजो भाव मन वचकली॥

उक्त तीर्थ वन्दना-पद्यों के पढ़ने के साथ ही पाठक के हृदय में एक शका उठे विना न रहेगी कि द्विज विश्वनाथ चम्पापुरी पावापुरी के निकट पहुँचकर भी सम्मेदशिखर की वन्दना करने से कसे रह गये? इसका कुछ समाधान हमें मिलता है इसी गुटके में उक्त पद्यों से, जिनमें कि मुनि धर्मकीर्त्ति का नाम रचयिता के रूप में अंकित है। उनको साथ में दे देने से प्रमुख तीर्थों की वन्दना सम्पन्न हो जाती है। वे पद्य इस प्रकार हैं –

(१)

मुक्तागिरि मनोहार तीर्थ मोटो तिहां जानों,
आठ कोड़ि मुनिराय मुक्ति गया बखानों।
निर्मल जलनी धार आम्र गन्बोदक सोहै,
चंपक मोगर बेलि कुन्द परिमल मन मोहै॥
जिनवर-भवन त्रिभुवन-विदित, भावधरी वदो सदा।
मुनि धर्मकीर्त्ति भावें भने, मुक्तागिरि मगल मुदा॥

(२)

सम्मेद शिखर मंझार बीस तीर्थंकर जानो,
मुक्ति गया मनोहर गुण तेहना बखानो।
देश देश ना संघ भाव-धरि वंदन आवे,
पहिरें निर्मल चीर वसु विध पूजा लावे॥
देवनि करि रजनी-समय, विविध वाद्य बाजें सदा।
मुनि धर्मकीर्त्ति भावें भने, सम्मेदशिखर वंदो मुदा॥

(३)

गिरि कैलाश मंझार वृषभ तीर्थंकर जानों,
मुक्ति गया भव तार कर्म वसु हनिय बखानों।
भरत चक्रपति सार तार जिनगेह कराव्या,
बहोत्तर मणिमय बिंब वरन निज-निजसम भाव्या॥
साठि सहस्त्र शत सरगना तेजई तें अष्टापद करया।
अष्टापदहि नुति हाथ कि रायें ते नित अनुसरया॥